जनवरी-फरवरी माह के बागवानी कार्य

हरे कृष्ण*, अरविंद कुमार सिंह, पुष्पेंद्र प्रताप सिंह***** और **श्वेतांक सिंह******

भारत ऋतुओं का देश है। यहां प्रत्येक ऋतु धरा का मानो शृंगार करती हो। शीत ऋतु में जहां पर्वत शृंखलाएँ बर्फ की सफेद चादरों से ढकी तो वहीं मैदानी भाग सफेद कोहरे से सराबोर होते हैं। शीत ऋतु में उत्तर-पूर्व व्यापारिक पवन पूरे देश में भूमि से समुद्र की तरफ बहती है। इसके कारण सामान्यतया मौसम में शुष्कता बनी रहती है वहीं भारत के उत्तर-पश्चिमी भाग में पश्चिमी विक्षोभ के कारण वर्षा भी होती है। इस वर्ष मौसमी घटना 'अल निनो' के जनवरी-मार्च, 2024 तक बने रहने की संभावनाएं हैं। इससे संभावित रूप से अधिक गंभीर मौसम की स्थिति उत्पन्न होने का पूर्वानुमान किया गया है। जलवायु परिवर्तन के इस दौर में सफल बागवानी करने के लिए किसान भाइयों को पूर्व से कहीं अधिक सजग रहने की आवश्यकता है।

जनवरी माह के मध्य में खरीफ फसलों की कटाई को त्यौहार के रूप में देश के विभिन्न भागों में संक्रांति, लोहड़ी, बिहू, पोंगल इत्यादि के रूप में मनाते हैं। इस द्विमाही, जहां पहले महीने में हाड़ कंपा देने वाली ठण्ड पड़ती है, वहीं दूसरी तरफ दूसरे माह में वसंत के आगमन से ठण्ड एवं कोहरे से राहत मिलती है। जिस तरह से शीत ऋतु के जाने के बाद बसंत का आनन्द मिलता है, ठीक उसी तरह जीवन में संघर्ष करने के बाद सफलता का आनन्द मिलता है। निरंतर संघर्ष करते रहने के इसी संदेश के साथ इस द्विमाही बगीचों में होने वाली उद्यानिकी क्रिया-कलापों को तत्परता से करना आवश्यक है क्योंकि इस समय बागों में की गयीं अंत:सस्यन गतिविधियों का पौधों की उत्तरजीविता एवं फलन पर निर्णायक प्रभाव पड़ता है। शीत ऋतु में पड़ने वाली ठंड विभिन्न फलों विशेषकर शीतोष्ण फलों के द्रुतशीतन आवश्यकताओं (चिलिङ्ग रिकवायरमेंट) की पूर्ति के लिए बहुत महत्वपूर्ण होता है। इनके अभाव में शीतोष्ण वृक्षों में उचित कलिका फुटाव व फलन नहीं होता है। चूंकि इस अवधि में बहुतेरे फल वृक्षों में पुष्पन की प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती है। अत: उत्पादन की दृष्टि से यह द्विमाही अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसके अतिरिक्त इस अवधि में, नवस्थापित बागों की देखभाल, निराई-गुड़ाई, सिंचाई, उर्वरण, कीट एवं व्याधियों से रोकथाम जैसे महत्वपूर्ण कार्य करने होते हैं। फलों की उच्च गुणवत्ता के उत्पादन के लिए बगिया की समुचित देखभाल अति आवश्यक है।

*भाकृअनुप-भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान, वाराणसी; **केंद्रीय बागवानी परीक्षण केंद्र, (केंद्रीय शुष्क बागवानी संस्थान), वेजलपुर (गोधरा), गुजरात; ***भारतीय कृषि प्रणाली अनुसंधान संस्थान, मेरठ, उत्तर प्रदेश; ****आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, अयोध्या, उत्तर प्रदेश

आम

जनवरी में नर्सरी में लगे पौधों को पाले से सुरक्षा के लिए छप्पर से ढकना चाहिए। वहीं दूसरी ओर नवस्थापित बागान में छोटे पौधों को भी पुआल से ढक दें। पौधे को तीन तरफ से आच्छादित कर दिया जाता है और सूर्य के प्रकाश व हवा आने के लिए दक्षिण-पूर्व की ओर एक जगह छोड़ दी जाती है। पाले से बचाव के लिए बाग में समय-समय पर हल्की सिंचाई करें। बागों की निराई-गुड़ाई एवं सफाई का कार्य करें। आम के नवरोपित बागों की सिंचाई करें।

इस समय लगने वाले बौरों का भी ध्यान रखना आवश्यक है, क्योंकि इन्हीं पर फलोत्पादन निर्भर करेगा। जनवरी के प्रथम सप्ताह में आने वाले बौर में फल नहीं लगते और ये अक्सर गुच्छे का रूप धारण कर लेते हैं। अत: ऐसे बौर को निकालकर नष्ट कर दें। आम में उर्वरक देने का यह सही समय है। इसके लिए नाइट्रोजन 500 ग्राम, फॉस्फोरस 500 ग्राम तथा पोटाश 700 ग्राम प्रति पौधा प्रयोग करें। इन्हें मिट्टी में मिलाकर हल्की सिंचाई कर दें। बागों की निराई-गुड़ाई एवं सफाई का कार्य करें।

फरवरी में थालों की गुड़ाई करें। फुदका या तेला (मैंगो हॉपर) के नियंत्रण के लिए इमिडाक्लोप्रिड (0.3 प्रतिशत) तथा चूर्णिल आसिता रोग से बचाव के लिए केराथेन (20 ग्राम प्रति 100 लीटर पानी में) अथवा घुलनशील गंधक दो ग्राम प्रति लीटर पानी या हेक्साकोनाजोल के 0.1 प्रतिशत प्रति लीटर के घोल का छिड़काव फरवरी के अंतिम सप्ताह

आम

में अवश्य करें। फरवरी में छोटे पौधों के ऊपर से छप्पर हटा दें। मिली बग (गुजिया) के बचाव के लिए वृक्षों के तने पर पॉलीथीन की 3 फुट चौड़ी पट्टी बांध दें एवं 250 ग्राम प्रति वृक्ष की दर से क्लोरपायरीफॉस धूल (1.5 प्रतिशत) को पेड़ के चारों ओर की मिट्टी में मिश्रित करना चाहिए। इसके अतिरिक्त, भूमि की सतह पर परभक्षी ब्यूवेरिया बेसियाना (2 ग्राम प्रति लीटर, 1x107 बीजाणु प्रति मिलीलीटर) अथवा 5 प्रतिशत नीम बीज के गिरी संत् का अनुप्रयोग प्रौढ़ कीटों को मारने के लिए करें। ध्यान रखने योग्य बात यह है, कि इन्हीं दिनों पौधों पर फूल आते हैं और यदि किसी भी कीटनाशी का प्रयोग फूलों पर किया गया, तो संपूर्ण परागण न होने से कम फल लगेंगे।

केला

जनवरी के प्रथम एवं तृतीय सप्ताह में सिंचाई करें ताकि पाले से बचाव हो सके। पाले से बचाव के लिए किसी पलवार (मल्च) का प्रयोग करें तथा बागों में सायंकाल में धुआं भी करें। पौधों को यदि सहारा न दिया हो तो बांस के डंडे से सहारा प्रदान करें। जनवरी माह में उत्तर भारत में अत्यधिक ठंडक की वजह से केला जैसी फल फसलों के विकास पर बहुत ही विपरीत प्रभाव पड़ता है, बाग रोगग्रस्त दिखाई देते हैं। फरवरी माह में जब तापक्रम बढ़ने लगता है, उस समय बाग पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। अत्यधिक ठंड की वजह से केले की अधिकांश पत्तियां सूख जाती हैं, सभी सूखी एवं रोगग्रस्त पत्तियों को काटकर खेत से बाहर करें। इससे रोग की उग्रता में कमी आयेगी। केवल एक तलवारी पत्ती (भूस्तारी) को छोड़कर पौधे के आधार से निकलने वाली अन्य पत्तियों को काट दें। फरवरी के प्रथम तथा तृतीय सप्ताह में सिंचाई करें। नाइट्रोजन की 60 ग्राम मात्रा प्रति 10 लीटर पानी में डालकर छिड़काव करें। बागों की निराई-गुड़ाई एवं सफाई का कार्य करें। यदि सिंचाई की व्यवस्था हो, तो फरवरी माह में केले को रोपित किया जा सकता है। इसके लिए विषाणु, फफूंद और जीवाणु रोगमुक्त मातृ पौधों से 'तलवारी पत्ती वाली भूस्तारियों' का चयन करें। केले की किस्मों यथा नेंद्रन, रस्थली, नेय पूवन और पूवन के लिए 3-5 माह पुराने, आकार में एक समान, 1-1.5 किलोग्राम के भूस्तारी का प्रयोग करें। कर्पूरवल्ली और लाल केले जैसी लंबी अवधि की किस्मों के लिए 1.5-2.0 किलोग्राम वजन वाले थोड़े बड़े भूस्तारियों का उपयोग किया जाना चाहिए। सूक्ष्म प्रवर्धित पौधे लगभग 30 सें.मी. लंबे, कम से कम पांच पूरी तरह से खुले स्वस्थ पत्तों के साथ 5 सें.मी. लंबे होने चाहिए। रोपण से पूर्व, प्रकन्दों की जड़ों को धो लें और फिर क्लोरपाइरीफॉस 20 ईसी/2.5 मिली प्रति लीटर पानी के घोल में डुबोएं। फसल को प्रकन्द सूंडी और सूत्रकृमि से बचाने के लिए रोपाई से पहले कार्बोफ्यूरॉन 3 प्रतिशत सीजी 50 ग्राम में प्रति जड़ों को डुबोएं और उसके बाद 72 घंटों के लिए छांव में सुखाएं। फ्यूजेरियम म्लानि की रोकथाम के लिए, जड़ों को कार्बेन्डाजिम 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में 15-20 मिनट के लिए डुबोयें। केले की जड़ों को 45x45x45 सें.मी. या 60x60x60 सें.मी. आकार के गड्ढों में रोपित करें। गड्ढों को धूप में खुला छोड़ें, इससे हानिकारक कीट मर जायेंगे। गड्ढों को 10 किलो गोबर की सड़ी खाद और नीम खली 250 ग्राम से भरें। जड़ों को गड्ढों के मध्य में रोपित करें और मिट्टी के आसपास अच्छी तरह से दबायें। गहरी रोपाई ना करें।

सिट्रस

जनवरी में एक-दो सिंचाई करें तथा पाले से बचाने के हर संभव उपाये करें। पौधों को फरवरी से मार्च माह तक रोपित कर सकते हैं। पौधे लगाने से लगभग एक माह पूर्व खेत में 1 घन मीटर के गड्ढे खोद लेने चाहिए। पौधा लगाने से पहले प्रत्येक गड्ढे में 20-25 कि.ग्रा. गोबर की खाद और 1 कि.ग्रा. सुपर फॉस्फेट मिला लें। दीमक नियंत्रण के लिए क्लोरपायरीफॉस अथवा नीम की खली हर गड्ढे में मिलाएं। एक गड्ढे से दूसरे की दूरी 6-8 मीटर की होनी चाहिए तथा इनमें खाद डालकर सिंचाई करें ताकि मिट्टी बैठ जाए। मूलवृंत तैयार करने के लिए बीज की बुआई पॉलीथीन में करें। हर बैग में दो से तीन बीज डालें। इस द्विमाही प्रति पौधा 400 ग्राम नाइट्रोजन, 200 ग्राम फॉस्फोरस तथा 400 ग्राम पोटाश का प्रयोग 50 कि.ग्रा. गोबर की खाद के साथ करके हल्की सिंचाई कर दें।

अमरूद

अमरूद

जनवरी माह में अमरूद के बागों में फलों की तुड़ाई का कार्य जारी रखें। तुड़ाई का सबसे अच्छा समय सुबह का होता है। फलों को उनकी किस्मों के अनुसार अधिकतम आकार तथा परिपक्व-हरे रंग (जब फलों की सतह का रंग गाढ़े से हल्के हरे रंग मे परिवर्तित हो रहा हो) पर तोड़ना चाहिए। इस समय फलों से एक सुखद सुगंध भी आती है। सुनिश्चित करें कि अत्यधिक पके फलों को तोड़े गए अन्य फलों के साथ मिश्रित नहीं किया जाए। प्रत्येक फल को अखबार से पैक करने पर फलों का रंग और भंडारण क्षमता बेहतर होती है। फलों को पैक करते समय उन्हें एक-दूसरे से रगड़ने पर होने वाली खरोंच से भी बचाना चाहिए। इसके लिए आवश्यक है कि बक्से के आकार के अनुसार ही उनमे रखे जाने वाले फलों की संख्या निर्धारित हो। जनवरी में पत्तियों पर कत्थई रंग आना सूक्ष्म तत्वों की कमी के कारण होता है। अत: कॉपर सल्फेट तथा जिंक सल्फेट का 0.4 प्रतिशत की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें। फरवरी में आने वाले फूलों को तोड़ दें ताकि वर्षा ऋतु में आने वाली कम गुणवत्ता वाली फसल की अपेक्षा जाड़े वाली अच्छी फसल को न लेने के लिए फूलों की तुड़ाई के अतिरिक्त नेप्थेलीन एसिटिक अम्ल (100 पी.पी.एम) का छिड़काव करें एवं सिंचाई कम कर दें। फरवरी के दूसरे पखवाड़े में छंटाई का कार्य शुरू किया जाना चाहिए। यह कार्य मार्च माह के प्रथम सप्ताह तक जारी रखा जा सकता है। पिछले मौसम में विकसित शाखाओं के 10-15 सें.मी. अग्र भाग को काट देना चाहिए। इसके अतिरिक्त, टूटी हुई, रोगग्रस्त, आपस में उलझी शाखाओं को भी निकाल देना चाहिए। छंटाई के तुरंत बाद कॉपर ऑक्सीक्लोराइड (2-3 प्रतिशत) का छिड़काव अथवा बोर्डो पेस्ट का शाखाओं के कटे भाग पर लेपन करना चाहिए। बागों की निराई-गुड़ाई एवं सफाई का कार्य करें। अमरूद के नवरोपित बागों की सिंचाई करें।

सिट्रस

बागों की निराई-गुड़ाई एवं सफाई का कार्य करें। फरवरी में फूल आने से कुछ दिन पहले सिंचाई न करें अन्यथा सभी फूल झड़ सकते हैं। यदि फूलों या फलों में गिरने की समस्या अधिक हो तो 2-4, डी (10 ग्राम प्रति 100 लीटर पानी में घोलकर) का छिड़काव करें। फल लगते समय पर्याप्त मात्रा में नमी बनाए रखें। नए पौधे तैयार करने हेतु फरवरी के अंत में कलिकायन (बडिंग) की जा सकती है। यह द्विमाही कांट-छांट के लिए भी उपयुक्त है। पौधे के तने की अच्छी वृद्धि के लिए, भूमि की सतह से 50-60 सें.मी. समीपस्थ शाखाओं को निकाल देना चाहिए। कांट-छांट के पश्चात बोर्डो लेप का प्रयोग अवश्य करें।

अंगूर

अच्छे अंगूर उत्पादन हेतु, वार्षिक काट-छांट अत्यंत आवश्यक है। उत्तरी भारत में अंगूर की काट-छांट के लिए जनवरी सबसे उपयुक्त माह है। कांट-छांट से 15 दिनों पूर्व 2-5 मि.ली. एथेफोन का छिड़काव पूर्ण रूप से पर्णपात को सुनिश्चित करता है। चूंकि अंगूर के गुच्छे नयी टहनियों में लगते हैं, अत: पिछले वर्ष की टहनियों को, किस्म की ओजस्विता के आधार पर, एक निश्चित लंबाई तक काटना महत्वपूर्ण होता है। ब्यूटी सीडलेस को 2-3, परलेट को 3-4, पूसा उरवासी व पूसा नवरंग को 4-6 तथा पूसा सीडलेस व थॉमसन सीडलेस को 9-12 कलिकाओं तक काटना चाहिए। काट-छांट के बाद कटे भाग को 1 प्रतिशत बोर्डो मिश्रण से उपचारित करें।

अंगूर

पपीता

पपीता

पपीते को पाला अत्यधिक हानि पहुंचाता है। अत: जनवरी में पाले से बचाने के लिए पर्याप्त प्रबंध करें। पौधों को पुआल से अथवा अवयनित (नॉनवोवेन) कपड़ों से ढक दें तथा समय पर सिंचाई करते रहें। पुआल को फरवरी के अंत में हटा दें। 25 ग्राम नाइट्रोजन, 50 ग्राम फॉस्फोरस तथा 100 ग्राम पोटाश का प्रयोग फरवरी में प्रति पौधा की दर से करें। बागों की निराई-गुड़ाई एवं सफाई का कार्य करें। प्रवर्धन हेतु बीजों की बुआई फरवरी माह में की जा सकती है। यह मार्च के महीने तक जारी रह सकती है। बोने से पहले बीज को शोधित अवश्य करें। यदि सिंचाई की सुविधा उपलब्ध हो तो फरवरी माह में रोपण का कार्य किया जा सकता है। पौधों की रोपाई संध्या काल में करनी चाहिए। रोपाई के पश्चात सिंचाई करना आवश्यक होता है। जब तक अच्छी तरह से पौधा लग न जाए तब तक प्रतिदिन हल्की सिंचाई करनी चाहिए। पपीते पर मिट्टी चढ़ाना जरूरी होता है। प्रत्येक गड्ढे में एक पौधे को रखने के बाद पौधे की जड़ के आसपास 30 सें.मी. की गोलाई में मिट्टी को ऊंचा चढ़ा देते हैं ताकि पेड़ के पास सिंचाई का पानी अधिक न लग सके और पौधे सीधा खड़ा रहे। पपीते के खेत को खरपतवार से मुक्त रखें। जनवरी-फरवरी में हाथों से खेत की गुड़ाई अवश्य करें।

कल्लों के एकरूप फुटाव हेतु कलमी पौधों पर 1.5 प्रतिशत व कर्तन से तैयार पौधों पर 1 प्रतिशत हाइड्रोजन साइनामाइड का उपयोग करें। यह रसायन बाजार में डोर्मेक्स या डोर्ब्रेक के नाम से उपलब्ध है। वैकल्पिक रूप से 2 प्रतिशत थायोयूरिया के तीन छिड़काव से भी कलिकाएँ एक सप्ताह पूर्व ही प्रस्फुटित होने लगती हैं। मिली बग, थ्रिप्स और चींटियों से बचाव हेतु मेटारिजियम अनिसोप्लिया + ब्यूवेरिया बेसियाना (2x108 बीजाणु प्रति मिली) के 2 + 2 लीटर प्रति हैक्टर की दर से मृदा उपचार करें। भृंग का प्रकोप होने पर 0.4 मिली प्रति लीटर पानी इमिडाक्लोप्रिड का छिड़काव करें। अंगूर में प्रथम वर्ष गोबर/कम्पोस्ट खाद के अलावा 100 ग्राम नाइट्रोजन, 60 ग्राम फॉस्फेट व 80 ग्राम पोटाश प्रति पौधा आवश्यक होता है। 5 वर्ष या इससे ऊपर यह मात्रा बढ़कर 500 ग्राम नाइट्रोजन, 300 ग्राम फॉस्फेट व 400 ग्राम पोटाश हो जाती है। फॉस्फोरस की सम्पूर्ण मात्रा तथा नाइट्रोजन व पोटाश की आधी मात्रा काट-छांट के बाद जनवरी माह में दें। उर्वरक डालने के बाद हल्की सिंचाई करें। कटी हुई शाखाओं से 30-40 सें.मी. आकार की कलमें तैयार कर लें तथा इन्हें 10-15 दिनों तक नम भूमि में दबाने के बाद पौधशाला में लगा दें। बेहतर परिणाम हेतु, कलमों को 500-1000 पीपीएम इंडोल ब्यूटाइरिक अम्ल से उपचारित भी किया जा सकता है। उत्तरी भारत में अंगूर के नए बाग लगाने का भी यही उपयुक्त समय है। फरवरी में चूर्णिल आसिता रोग से बचाव के लिए केराथेन (0.1 प्रतिशत) का छिड़काव करें। पौधों की तीन पत्तियों वाली अवस्था पर 2 ग्राम प्रति लीटर ट्राइकोडर्मा का छिड़काव मृदुल और चूर्णिल आसिता दोनों ही व्याधियों से बचाव में उपयोगी सिद्ध हुई है। बागों की निराई-गुड़ाई एवं सफाई का कार्य करें।

बेर

बेर में चूर्णिल आसिता रोग अत्यधिक हानि पहुंचाता है। इसके लिए फरवरी में 0.2 प्रतिशत केराथेन का छिड़काव करें। 15 दिनों के अंतराल पर दोबारा यही छिड़काव करें। फरवरी के अंत में किसान बेर के पौधे भी लगा सकते हैं। फरवरी में बेर की अगेती किस्में पकने लगती हैं। फलों को अच्छी दशा में बनाए रखने के लिए, तुड़ाई सुबह या शाम को ही करनी चाहिए। तुड़ाई के समय फलों को उनके रंग एवं आकार के आधार पर छांटकर श्रेणीकृत किया जाना चाहिए। छँटाई उपरांत फलों को कपड़े की चादरों, जूते के बोरों, नाइलोन की जालीदार थैलियों, बांस की टोकरियों, लकड़ी अथवा गत्तों के डिब्बों में रखकर बाजार भेजा जा सकता है। बागों

अनार

अनार

जंगली अनार के पौधों पर वेज ग्राफ्टिंग द्वारा जनवरी-फरवरी माह में 90 प्रतिशत सफलता के साथ पौधे तैयार किए जा सकते हैं। यदि जनवरी माह के दौरान पौधों को सुषुप्त अवस्था में रखा गया है तो इस अवधि में 15 दिनों के अंतराल पर बोर्डो मिश्रण और कॉपर ऑक्सीक्लोराइड व ब्रोन्पोल का एकांतरित छिड़काव करें। सिंचाई की उपलब्धता के आधार पर नए बागों की स्थापना का कार्य फरवरी माह में किया जा सकता है। अनार के किशोर पौधों (1-3 वर्ष आयु) में संस्तुत उर्वरकों की मात्रा को नयी वृद्धि के साथ तीन बराबर भागों में जनवरी, जून और सितंबर माह में देनी चाहिए। यदि मृग बहार की फसल ली गयी हो तो तैयार फलों को जनवरी माह में तुड़ाई के पश्चात बाजार ले जाने की व्यवस्था करें। फलों की तुड़ाई के तुरंत बाद, मध्यम से गहरी छंटाई कर रोगग्रस्त, टूटी और एक-दूसरे में मिली शाखाओं को अलग करें। छंटाई के तुरंत बाद मोटे तनों के कटे हुए सिरों को 10 प्रतिशत बोर्डो लेप के साथ लिपाई करें। काटे गए पौधों पर छंटाई के बाद उसी संध्या 1 प्रतिशत बोर्डो मिश्रण का छिड़काव करना चाहिए। यदि फल मक्खी का प्रकोप हो तो प्रति हैक्टर 12 मैकफेल/पानी की बोतल प्रपंच को टोरुला यीस्ट/बैक्ट्रोसेरा डॉर्सालिस ल्यूर के साथ बाग में लगाएं और 15-20 दिनों के अंतराल पर ल्यूर को बदलें।

की निराई-गुड़ाई एवं सफाई का कार्य करें।

लीची

जनवरी में पाले से सुरक्षा के प्रबंध अवश्य करें। फरवरी में लीची में फूल आते समय सिंचाई न करें क्योंकि इससे फूलों के गिरने का डर रहता है। फूल आने से पहले एवं बाद में पानी की समुचित व्यवस्था करें। चूर्णिल आसिता रोग के प्रकोप से बचने के लिए लीची में संस्तुत रसायनों का प्रयोग करें। फुदका कीट से बचाव हेतु इमिडाक्लोरोप्रिड (0.7-1.0 मिली प्रति लीटर) अथवा थायोमेथोक्साम (2-3 ग्राम प्रति 5 लीटर पानी) का छिड़काव करें। कैल्शियम अमोनियम नाइट्रेट की आधी मात्रा अर्थात 1.5 कि.ग्रा. प्रति पौधा फरवरी में प्रयोग करें। लीची के नवरोपित बागों की सिंचाई करें। बागों की निराई-गुड़ाई एवं सफाई का कार्य करें।

आंवला

उत्तरी भारत में, आंवला के फलों की तुड़ाई जनवरी-फरवरी माह तक जारी रह सकती है। अत: इन क्षेत्रों में, इस दौरान फलों से लदे वृक्षों को बांस-बल्ली की सहायता से सहारा देने की व्यवस्था की जानी चाहिए, ताकि शाखाओं को टूटने से रोका जा सके। अत: बिक्री की उचित व्यवस्था करें। चूंकि, इस दौरान फलों का भी विकास होता है, अत: सिंचाई की भी समुचित व्यवस्था होनी चाहिए। तुड़ाई से 15 दिनों पूर्व सिंचाई रोक दी जाए ताकि फल समय से तैयार हो सकें। जिन क्षेत्रों में सिंचाई की समुचित व्यवस्था हो, उन क्षेत्रों में बसंत के आगमन के साथ ही पौध रोपण का कार्य फरवरी माह के दूसरे पखवाड़े से प्रारम्भ किया जा सकता है। यह मार्च तक जारी रखा जा सकता है। साथ ही वे क्षेत्र जिनमें शीत ऋतु में पाले की आशंका हो, वहाँ गंधक के अम्ल (0.1 प्रतिशत) का छिड़काव पूरे वृक्ष पर किया जाना चाहिए। जरूरत पड़े तो छिड़काव को दोहराएँ। फरवरी में फूल आने का समय होता है जो नई पत्तियों के साथ आते हैं। इस समय सिंचाई न करें। आंवला के बाग में गुड़ाई करें एवं थाले बनाएं।

आँवला

आंवला के एक वर्ष के पौधे के लिए 10 किलोग्राम गोबर/कम्पोस्ट खाद, 100 ग्राम नाइट्रोजन, 50 ग्राम फॉस्फेट व 75 ग्राम पोटाश देना आवश्यक होगा। 10 वर्ष या उससे ऊपर के पौधे में मात्रा बढ़ाकर 100 कि.ग्रा. गोबर/कम्पोस्ट खाद, 1 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 500 ग्राम फॉस्फेट व 750 ग्राम पोटाश हो जाएगी। उक्त मात्रा से पूरा फॉस्फोरस, आधी नाइट्रोजन व आधी पोटाश की मात्रा का प्रयोग जनवरी माह से करें। बागों की निराई-गुड़ाई एवं सफाई का कार्य करें।

बेल

फरवरी में बेल में पुष्पण की प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती है। इस अवधि में बेल के थालों की सफाई कर उसे खरपतवार से मुक्त रखें। अर्धशुष्क वर्षा आधारित क्षेत्रों मे फल फरवरी माह के अन्त से तोडने योग्य हो जाते हैं। जब फलों का रंग गहरे हरे रंग से बदलकर पीला-हरा होने लगे तब फलों की तुड़ाई 2 सें.मी. डण्ठल के साथ करनी चाहिए। तोड़ते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि फल जमीन पर न गिरने पायें अन्यथा फलों की त्वचा चटक जाती है। भण्डारण के समय इन चटके भागों से सड़न आरम्भ हो जाती है।

कटहल

यदि दिसम्बर में खाद एवं उर्वरक न दिए गए हों, तो जनवरी में यह कार्य पूर्ण करें। छोटे पौधों की पाले से रक्षा करें। फरवरी के अंत में मिली बग के प्रकोप से बचने के लिए पेड़ों पर आम की भांति पॉलीथीन की पट्टी लगाएं।

फालसा

उत्तरी भारत में फालसे में जनवरी में गहन काट-छांट करनी चाहिए। इसके बाद कटे भागों पर बोर्डो लेप लगाएं। पौधों को उपयुक्त मात्रा में गोबर की खाद और उर्वरक दें।

फालसा

लोकाट

वे क्षेत्र जिनमें सिंचाई की समुचित व्यवस्था हो, उनमें में बसंत के आगमन के साथ ही पौध रोपण का कार्य फरवरी माह के दूसरे पखवाड़े से प्रारम्भ किया जा सकता

खजूर

खजूर

जनवरी-फरवरी माह में खजूर के बागों में कई महत्वपूर्ण कार्य किए जाते हैं, इनमें कटाई-छंटाई, उर्वरकों का प्रयोग तथा परागण प्रमुख हैं। खजूर के पौधे एकबीज पत्रीय तथा एकल तना होने से शाखित नहीं होते हैं। अत:, व्याधिग्रस्त, सूखी, पुरानी, क्षतिग्रस्त पत्तियों को सर्दियों में हटा देना चाहिए। फल गुच्छों से सटी हुई पत्तियों के डंठलों से कांटे निकालना आवश्यक है। इनके आसपास परागण, फल गुच्छों की छँटाई, डंठल मोड़ना, रसायनों का छिड़काव, थैलियाँ लगाना एवं फलों की तुड़ाई आदि कार्य सरलता से हो सकें। पत्ती को डंठल सहित जितना संभव हो सके, मुख्य तने के समीप से हटाया जाना चाहिए ताकि मुख्य तने की सतह को चिकना रखा जा सके। फल गुच्छा अनुपात 1:6 रखने पर अधिक फल उत्पादन एवं उत्तम गुणवत्ता वाले फल प्राप्त होते हैं। अत:, अच्छी फसल हेतु पूर्ण विकसित वृक्ष पर लगभग 70-100 पत्तियाँ होनी चाहिए। फॉस्फोरस (0.5 कि.ग्रा.) और पोटाश (0.5 कि.ग्रा.) की पूर्ण मात्रा और नाइट्रोजन की 50 प्रतिशत मात्रा (0.75 कि.ग्रा.) को फूल आने से तीन सप्ताह पहले दिया जाना चाहिए, विभिन्न किस्मों में जनवरी-फरवरी माह के दौरान पुष्पण होता है, तत्पश्चात सिंचाई की जानी चाहिए।

खजूर में नर एवं मादा पुष्पक्रम अलग-अलग पौधों पर आते हैं। अत: अच्छे उत्पादन के लिए कृत्रिम परागण किया जाता है। इसके लिए ताजे एवं पूर्ण रूप से खुले हुये नर पुष्पक्रमों को अखबार या पॉलिथीन की चादर पर झाड़कर एकत्रित कर लेते हैं। मादा पुष्पक्रमों को जो तुरंत खिले हों, परागकणों में डुबोए गए रूई के फाहों से दो-तीन दिन तक लगातार प्रात:काल परागित करें या नर पुष्पक्रमों की लड़ियों को काटकर खुले मादा पुष्पक्रम के मध्य में उलटा करके हल्के से बांध दिया जाता है। इससे उनमें से परागकण धीरे-धीरे गिरते रहें। जनवरी-फरवरी माह में लेसर डेट मॉथ कीट के लार्वा परागकणों को खाकर नुकसान पहुँचा सकते हैं।

है। यह मार्च तक जारी रखा जा सकता है। एक मीटर गहरे और एक मीटर व्यास के गड्ढे की खुदाई का कार्य वास्तविक वृक्षारोपण से कम से कम एक महीने पहले किया जाना चाहिए। जिन क्षेत्रों में दीमक का प्रकोप हो, वहाँ क्लोरपाइरीफॉस 10 मिलीलीटर प्रति गड्ढे की दर से प्रयोग किया जाना चाहिए। प्रति पौध 25-30 किग्रा अच्छी तरह से सड़ी हुई गोबर खाद दी जानी चाहिए। इस माह के दौरान, शील्ड अथवा 'टी' कलिकायन विधि द्वारा तीन माह पुरानी शाखा से कालिका लेने पर पौध-प्रवर्धन में भी अपेक्षित सफलता मिलती है। उत्तर भारत के कुछ-कुछ स्थानों पर जनवरी माह तक लोंकाट में फूल आते हैं। फलों के सैट होने के बाद, 15 दिनों के अंतराल पर सिंचाई की जानी चाहिए ताकि फलों का विकास हो सके। फरवरी माह में नाइट्रोजन उर्वरक की आधी खुराक दी जा सकती है। यदि फल मक्खी का प्रकोप हो तो कीटनाशी इमिडाक्लोरोप्रिड (0.5 मिली/प्रति लीटर) का छिड़काव फरवरी माह में 15 दिनों के अंतराल पर दो बार किया जा सकता है।

शीतोष्ण फलों को लगाने का सही समय

शीतोष्णवर्गीय फलों के बाग लगाने का सही समय जनवरी है। यदि किसी कारणवश दिसम्बर में छंटनी न कर पाये हों, तो जनवरी में इन फलवृक्षों की छंटाई अवश्य करें। छंटाई, सधाई प्रणाली को ध्यान में रखकर करनी चाहिए। कटे भाग पर चौबटिया लेप (सिंदूर: कॉपर कार्बोनेट: अलसी तेल:: 1:1:1.25) लगा देना चाहिए। दो प्रतिशत डोर्मेंट तेल (सर्वो बागान छिड़काव तेल, हिंदुस्तान पेट्रोलियम छिड़काव तेल) का प्रयोग सैनजोस स्केल और चिचड़ी की रोकथाम के लिए किया जा सकता है। बागों की निराई-गुड़ाई एवं सफाई का कार्य करें।

फलदार व छोटे पौधों में गोबर की खाद तथा फॉस्फोरसयुक्त उर्वरकों का प्रयोग करना चाहिए। कीटों एवं रोगों की रोकथाम के लिए यदि दिसम्बर में कोई छिड़काव न कर पाए हों तो जनवरी के प्रथम सप्ताह में यह कार्य संपूर्ण करें। बागों में जनवरी में उर्वरक देना भी न भूलें।

स्ट्रॉबेरी

जनवरी में स्ट्रॉबेरी के खेत में निराई-गुड़ाई करें। यदि पलवार न बिछाई गई तो वांछित पलवार जैसे पुआल या पॉलीथीन का प्रयोग करें। फलों में उच्च गुणवत्ता प्राप्त करने के लिए फरवरी के शुरू में जिब्रेलिक अम्ल (75 पी.पी.एम.) का छिड़काव करें तथा समय पर सिंचाई करते रहें। पत्तियों पर यदि धब्बे दिखाई पड़ें तो डाईथेन-एम-45 (2 ग्राम प्रति लीटर पानी) या बाविस्टिन (1 ग्राम प्रति लीटर पानी) का छिड़काव करें। पहाड़ी क्षेत्रों में किसान स्ट्राबेरी को केवल नए पौधे तैयार करने के लिए लगाते हैं। यदि फरवरी के अंत में पौधों पर फूल आ रहे हैं तो उन्हें तुरंत हटा दें। मैदानी भागों में किसान ऐसा न करें। मैदानी भागों में फरवरी में स्ट्राबेरी की फसल तैयार हो जाती है। इसे तोड़कर 250 ग्राम के पैकेट में पैक कर बाजार भेजने की व्यवस्था करें।

इस द्विमाही किए जाने वाली कृषि कार्यों की चर्चा यहीं समाप्त करते हैं। अगले अंक में मार्च-अप्रैल में होने वाले कार्यों की चर्चा करेंगे। उत्पादन की दृष्टि से अगली द्वि माही भी अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि इस अवधि में अधिकांशत: फल वृक्षों में पुष्पण अथवा फलन की प्रारम्भिक अवस्था रहती

स्ट्रॉबेरी

है। इसके लिए विशेष सावधानियाँ बरतनी आवश्यक हैं। इन जानकारियों के लिए आपकी अपनी पत्रिका **'फल-फूल'** से जुड़े रहें तथा यथावत अपना अविरल स्नेह बनाएं रखें।